IJARETY

International Journal of Advanced Research in Education and TechnologY *(IJARETY)*

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor

doi crossref

निस्केयर
NISCAIR

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 10, Issue 4, July- August 2023 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2023.1004028

हिंदी साहित्य में कबीर की काव्य भाषा

राजराजेश्वरी एच.जी., डॉ. मीनेश जैन

शोधकर्ता, सनराइज यूनिवर्सिटी, अलवर

एसोसिएट प्रोफेसर, सनराइज यूनिवर्सिटी, अलवर

अमूर्त: हिंदी साहित्य में कबीर की काव्यभाषाष विषय पर यह निष्कर्ष किसी भी साहित्य प्रेमी के लिए कबीर के काव्यभाषा के महत्वपूर्ण आयामों को प्रकट करने का एक प्रयास है। कबीर के काव्य भाषा में गहराई है जिसमें सरलता, संवादपूर्णता और तात्पर्य सुंदरता के साथ मिलते हैं। उनकी भाषा आम जनता के दिल तक पहुंचती है, और उनके दोहों और पदों में छिपी ज्ञान की अमूल्यता होती है। वे सामाजिक और धार्मिक संदेशों को साहित्यिक अंदाज में प्रस्तुत करते हैं जिससे उनके काव्य में सहजता और प्रेरणा का आभास होता है। कबीर की काव्यभाषा में उन्होंने समाज की असमानता, धार्मिक अनुष्ठान की अनावश्यकता और मानवता के सामान्य मूल्यों की महत्वपूर्णता की बात की है। उनकी भाषा में बिना किसी तात्कालिकता के दीप और सजीवता होती है जो समस्याओं की मूल कोई मानवीयता की आलोचना करती है। इस अध्ययन से हम जानते हैं कि कबीर की काव्यभाषा न केवल उनकी विचारधारा को उजागर करती है, बल्कि हमें उनके समय से लेकर आज तक की समस्याओं की समझ में भी मदद करती है। उनके काव्य भाषा के माध्यम से हमें अपने आत्मविश्वास को उत्तेजित करने की प्रेरणा मिलती है और हमें समाज में सुधार की दिशा में काम करने की प्रेरणा प्राप्त होती है।

I. परिचय

प्रत्येक रचनाकार, कवि या लेखक के लिए अपनी अनुभूतियों एवं भावों को भाषा के द्वारा ही अपनी रचना में अभिव्यंजित किया जाता है, परन्तु रचनाकार द्वारा प्रयुक्त भाषा सामान्य भाषा से भिन्न होती है। डा० सियाराम तिवारी के अनुसार "काव्य भाषा सामान्य भाषा" से उसी प्रकार पृथक है जिस प्रकार लहर जल से भिन्न है, इस तरह काव्य भाषा सामान्य भाषा के भीतर की भाषा है। सामान्य भाषा या बोलचाल की भाषा में प्रत्येक शब्द का एक निश्चित अर्थ रहता है, परन्तु रचनाकार अपने सर्जनात्मक व्यक्तित्व से सामान्य भाषा के शब्दो में नए अर्थ का समावेश करता है। इसी संदर्भमें प्रो० राम स्वरूप चतुर्वेदी का कहना है कि, "भाषा की प्रकृति अपने आप में अमूर्तन की है। शब्द अन्ततः किसी मूर्त वस्तु या स्थिति के अमूर्त सर्तक भर होते हैं। इस प्रकार सारी भाषा अमूर्तन और प्रतीकन की क्रिया है।" यहाँ आचार्य चतुर्वेदी का तात्पर्य है कि काव्य भाषा शब्दों की बार-बार अमूर्त करती है। जैसे ही यह अनुभव होता है कि शब्द के साथ विशिष्ट अर्थ जुड़ गया है या अत्यधिक सम्पृक्त हो गया है, कवि शक्ति के साथ उसको पृथक करना चाहता है। कवि या रचनाकार अर्थ की उस विशिष्ट सम्पृक्तता को समाप्त कर वह उसकी अमूर्त और उन्मुक्त प्रकृति को पुनः स्थापित करता है। काव्य भाषा एवं सामान्य भाषा के स्तर पर शब्दो की यह दोहरी प्रकृति भाषा की अपनी विशेषता है। अर्थ के अस्तित्व को वह प्रत्येक स्थिति में स्वीकार करती है। सामान्य भाषा आम जनजीवन की दैनंदिन उपयोग की भाषा है। इसके कारण कवि का सरोकार उससे कम नहीं हो पाता है। इसके उलट सामान्य भाषा से जुड़कर ही काव्य भाषा में क्षमता विकसित होती है लेकिन वास्तव में यह प्रश्न काव्य बाहृय भाषा या गद्य भाषा और काव्य भाषा के संबधों से जुड़ा हुआ है। कवि के दृष्टिकोण से देखने पर यह प्रतीत होता ह कि कवि जिस सीमा तक सामान्य भाषा के खुलेपन से जीवन का वास्तविक समस्याओं से परिचित होगा उतना ही काव्य भाषा को जिदंगी के निकट लाते हुए समर्थ या सार्थक बना सकेगा। संत कवियों की भी दृष्टि ऐसी ही व्यापक थी जिसमें कबीर विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

कबीर का व्यक्तित्व हिंदी साहित्य का एक विवादास्पद व्यक्तित्व है। भक्तिकाल के संवेदनशील व्याख्याकार आचार्य रामचन्द शुक्ल भी कबीर की कविता के विवेचक नहीं माने जा सकते। आचार्य शुक्ल का मत है कि "यद्यपि वे पढ़े लिखे नहीं थे पर उनकी प्रतिभा बड़ी प्रखर थी जिससे उनके मुँह से बडी चुटीली और व्यंग्य चमत्कारपूर्ण बात निकलती थी। उनकी पंक्तियों में विरोध और असंभव का चमत्कार लोगो को बहुत आकर्षित करता था। कबीर अपने श्रोताओं पर यह अच्छी तरह भासित करना चाहते थे कि हमने ब्रहम का साक्षात्कार कर लिया है। इसी से वे प्रभाव डालने के लिए बड़ी लंबी चौडी गर्वोक्तियाँ भी कभी-कभी कहते थे। अपनी शोधपरक रचना "कबीर" मे आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी भी बडे संकोच के साथ अर्द्धकवि स्वीकार करते हैं। वर्तमान के कुछ आधुनिक चिंतक कबीर को बाज, कपोत, पपीहा तो कहते हैं पर कवि रूप में कबीर को स्पष्टतः स्वीकृत नहीं करते हैं। परन्तु कबीर एक कवि है। क्योंकि किसी भी साहित्यिक कृति या कविता में माध्यम की अपेक्षा मन्तव्य पर अधिक बल होता है। इसीलिए "कबीर कवि है क्योंकि उन्होंने अपनी काव्यभाषा का उपयोग अपने मन्तव्य को पाठक तथा श्रोता के मन तक सम्प्रेषित करने के लिए किया है।

कवि होते हुए भी वह व्यक्ति विचारक समाजसेवक, समाजसुधारक, जुलाहा, शिल्पकार इत्यादि कुछ भी हो सकता है, बल्कि सामाजिक पुर्नव्यवस्था के निमित्त वह क्रांति का अग्रदूत भी हो सकता है लेकिन उसके कवि व्यक्तित्व के समक्ष उर्पयुक्त सभी संदर्भ गौण है। प्रमुख होता है केवल कवि व्यक्तित्व। इसी प्रकार कबीर चाहे भक्त हो, विचारक हो, समाजसुधारक हो, जुलाहा हो और भी कुछ हो, परन्तु इन

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 10, Issue 4, July- August 2023 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2023.1004028

सबके पहले उनके व्यक्तित्व का नितांत महत्वपूर्ण पहलू कवि पक्ष है। क्योंकि अपने इसी रचनाधर्मी स्वरूप से अपनी समग्र सर्जनात्मकता के कारण ही वे न केवल भक्ति साहित्य पर वरन् समस्त हिंदी साहित्य पर एक गहरी छाप छोडते हैं। अतः चूंकि कबीर मूलतः कवि है तो कवि अभिव्यक्ति भाषा के माध्यम से होती है, जो कि कबीर की काव्यभाषा है। काव्य भाषा सामान्य भाषा से भिन्न होती है। सामान्य भाषा से काव्य भाषा के अलगाव की पुनरावृत्ति यहाँ उचित नहीं होगी। अतः सीधे कबीर की काव्यभाषा का विश्लेषण करना ही समीचीन होगा। कबीर की काव्य भाषा पर विचार करने के पूर्व यह जानना उचित ही होगा कि कबीर का स्वयं कविता या काव्यभाषा के संबंध में क्या मत था। कबीर कविता को परिभाषित करने की चेष्टा करते हुए कहते हैं।

II. प्रतीक विधान

मनुष्य अपनी भावानुभूतियों को अभिव्यक्ति विशद रूप में चाहता है लेकिन जब वह अपने भावो को साधारण तरीके से नहीं कर पाता है तो वह प्रतीको का आश्रय लेता है। प्रतीक का अर्थ है चिन्ह। डा० भगीरथ मिश्र का मत है, "अपने रूप, गुण कार्य या विशेषताओं के सादृश्य एवं प्रत्यक्षताओं के कारण जब कोई वस्तु या कार्य किसी अप्रस्तुत वस्तु, भाव, विचार, क्रिया कलाप, देश, जाति संस्कृति आदि का प्रतिनिधित्व करता हुआ प्रकट किया जाता है तब वह प्रतीक कहलाता है।" वस्तुतः प्रतीक में गोपन एवं आत्म प्रकाशन की क्षमता विद्यमान रहती है, जिसके कारण मन एवं वाणी के सामंजस्य से दोहरे अर्थ की अभिव्य जना होती है। शब्द मात्र अर्थ की ही व्याख्या कर सकते हैं। अतः उनका प्रभाव हमारी बुद्धि पर पडता है लेकिन प्रतीक, संयोग एवं संकेत की शक्ति से भरपूर होते है तथा उस यथार्थ को सांकेतिक करते हैं, जिसका अभिव्यक्तिकरण शब्दो द्वारा संभव नही, जिसके परिणाम स्वरूप आदि काल के धार्मिक एवं आध्यात्मिक अनुभूतियों का व्यक्तीकरण प्रतीक के माध्यम से हुआ है। प्रतीक मात्र कवि के काव्य तक ही सीमित नहीं है बल्कि कवि के बिल्कुल समीप ले जाते हैं। जहाँ पाठक उसके भावो, विचारो, रूचियों संस्कारो, मन की कल्पना शक्ति तथा परिस्थितियों को स्पष्टता से देख सकता है। मानव के भावो या विचारो का केन्द्रीय बिन्दु मन ही है, जिसकी अभिव्यक्ति साहित्य एवं कला के द्वारा होती है। कोई भी रचनाकार या कवि किस माध्यम से अपनी भावनाओं, विचारो एवं संवेदनो की अभिव्यक्ति करता है वह नितान्त रूप से किसी न किसी रूप का सहारा लेते हैं। प्रतीक की परिभाषा भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानो ने की है। "अग्रेजी विश्व कोष में प्रतीक की परिभाषा निम्न प्रकार से दी गयी है। अमूर्त का मूर्त के माध्यम से प्रस्तुतीकरण प्रतीक है।

प्रतीक शब्द का प्रयोग उस दृश्य वस्तु के लिये होता है जो मस्तिष्क के सामने किसी अप्रस्तुत वस्तु के सादृश्य को अपने सम्बन्धो द्वारा प्रस्तुत करती है। "हिन्दी साहित्य कोश में प्रतीक की इस प्रकार परिभाषा दी गयी है, "प्रतीक शब्द का प्रयोग उस दृश्य अथवा गोचर वस्तु के लिये किया जाता है जो किसी अदृश्य अगोचर या अप्रस्तुत विषय का प्रतिनिधान उसके साथ अपने साहचर्य के कारण करती है अथवा कहा जा सकता है कि किसी अन्य स्तर की समानुरूप वस्तु द्वारा किसी अन्य स्तर के विषय का प्रतिनिधित्व करने वाली वस्तु प्रतीक है। अमूर्त, अदृश्य, अश्रव्य, अप्रस्तुत विषय का प्रति विधान मूर्त दृश्य श्रव्य प्रस्तुत विषय द्वारा किया जाता है।" प्रतीक शब्द की व्युत्पत्ति 'प्रति' उपसर्ग पूर्वक धातु मे 'ईकन' प्रत्यय लगने से होती है। हलायुध कोश के अनुसार "जिस वस्तु या साधन के द्वारा बोध या ज्ञान की प्रतीति अथवा विश्वास होता हो उसे प्रतीक कहते हैं।"

III. बिम्ब-प्रधान

भाषा भावो की अभिव्यक्ति का वह सशक्त माध्यम है जो मानव अनुभूतियों की गहनता की सूक्ष्म से सूक्ष्म अभिव्यक्ति सामर्थ्य रखती है। अर्थात भाषा जहाँ व्यक्ति की अनुभूति से शब्दमय होती है वहीं वह उसी रूप में दूसरो को अनुभूति कराने की सामर्थ्य भी रखती है। इसीलिये कहा गया है कि भाषा मानव द्वारा प्रयुक्त ध्वनि संकेतो का एक समूह है तथा ये संकेत परम्परा और वातावरण के संयोग से धीरे-धीरे सामाजिक परिप्रेक्ष्य में विकसित होते हैं। भाषा विचारो को व्यक्त करती है लेकिन विचारो से अधिक उसका सम्बन्ध वक्ता के भाव इच्छा प्रश्न आदि तत्वों से रहता है। कवि या रचनाकार अपनी अनुभूतियों एवं विचारो को भाषा के माध्यम से ही अपनी कृति के अन्तर्गत अभिव्यक्त करता है। कवि की आकुलता भाषा के रूप में स्पंदनवती होकर एक जैसे भाव रूप का निर्माण करती है जिसमें विश्व हृदय डूबने उतराने लगता है। कवि अपनी कविता कला द्वारा संसार के समस्त स्थान पर जंगम पदार्थो को अनुप्राणित करता रहता है। उसमें उनकी भाषा को समझाने तथा उनके व्यवहारो को दूसरे लोगो को समझाने की क्षमता रहती है। कवि से संसार का समस्त कण बोलता है, जिसके परिणामस्वरूप ब्रह्माण्ड का प्रत्येक सत्य उसके लिये भाषा का रूप गृहण करता है। भाषिक स्वरूप के लिये बिम्ब विधान का विशिष्ट महत्व है। प्रतीक तथा बिम्ब काव्य की भाषा के निर्माण में प्रमुख भूमिका निभाते है। बिम्ब विधान के सन्दर्भ में रामचन्द्र शुक्ल का मत है कि "काव्य की भाषा' बिम्ब प्रधान होती है। बिम्बात्मकता कविता की भाषा की पहली शर्त है। तात्पर्य यह है कि कविता अपने वर्ग विशेष को चाहे वह मूर्त हो अथवा अमूर्त बिम्ब के रूप में प्रस्तुत करती है।"

वर्ण विन्यास के सन्दर्भ में "काव्य की भाषा बिम्ब भाषा होती है। इसका तात्पर्य यह है कि काव्य कला चित्रकला के गुणो को साथ लेकर चलती है, परन्तु काव्य एक इतनी व्यापक कला है कि उसमे चित्रकला के साथ-साथ संगीत कला के तत्व भी अनिवार्यतः समाहित होते हैं। नाद सौष्ठव काव्य भाषा का अनिवार्य तत्व है। शुक्ल जी ने कविता की भाषा के बिम्बात्मक होने पर मात्र इसलिये जोर नहीं दिया कि इससे

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 10, Issue 4, July- August 2023 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2023.1004028

वह अधिक प्रभावशाली हो जाती है। कवि की दृष्टि से भी बिम्ब विधान का विशेष महत्व है। काव्य निर्माण शब्द के माध्यम से होता है। शब्द से पूर्ण अर्थ, अनुभूति के रूप में कवि के हृदय में रहता है। कवि जिस वस्तु या भाव की अनुभूति करता है उसे उसी रूप में पाठक को भी कराना चाहता है। उसके लिये कवि के हृदय की आन्तरिक अनुभूति एवं बाह्य अभिव्यक्ति में साम्य होना नितान्त आवश्यक है।

बिम्ब के आवश्यक तत्व है चित्रात्मकता, भावात्मकता, शब्द, अर्थ, रूपकात्मक्ता, ऐन्द्रियता, कल्पना आदि। भाव संस्पर्श के बिना काव्य बिम्ब का अस्तित्त्व संभव नहीं है। चित्रात्मकता भी बिम्ब का आवश्यक तत्व है क्योंकि अनेक आलोचको ने बिम्ब को चित्र कहा है। ऐन्द्रिय अनुभव के आधार पर ही बिम्ब का निर्माण होता है। इसलिये कल्पना ही बिम्ब का कारण है। कवि की अनुभूति को पाठक तक उसी रूप में वहन करने में सार्थक शब्द ही माध्यम है। सन्त कबीरदास ने संवेदनाओं के माध्यम से लोक जीवन से सम्बन्धित बिम्ब ग्रहण किये हैं। ज्ञानेन्द्रियों के आधार पर संवेदनाएं पाँच हैं 1. दृश्य 2. श्रव्य 3. आस्वाद्य 4. स्पर्थ्य तथा 5. घातव्य आदि। संवेदनाओं मे अत्यधिक भिन्नता होते हुये भी दृश्य संवेदना का स्थान विशिष्ट है। अन्य संवेदनओं को भी दृष्टि संवेदना से ही व्यक्त किया जाता है जैसे ध्वनि और स्पर्श में भी दृष्टि संवेदना का सहचर्य होता है। काव्य मे नेत्रेन्द्रिय सम्बन्धी बिम्ब अधिक होते हैं। कवि का अनुभव और भाव अनुभूति का कारण भी दृष्टि संवेदना ही होती है। सन्त कवि कबीरदास जी ने भी अन्य कवियों की अपेक्षा दृष्टि बिम्बो की अधिकता है।

IV. अलंकार विधान

काव्य का प्रमुख उद्देश्य आनन्द का विधान करना है। लेकिन आनन्द के स्वरूप के सम्बन्ध में भारतीय विद्वानो में एकमत नहीं है। कोई उसे शरीर गत लावण्य के सदृश समझता रहा, कोई उसे आत्मा मानता है और कोई मनोरमता को काव्यगत आनंद मानता है। इतने विवादो के उपरांत भी काव्य मार्ग किसी प्रकार बाधित नहीं हुआ। इसलिये साहित्य जगत के अन्तर्गत अनेक सम्प्रदाय निर्मित हुए। शास्त्रीय दृष्टि से विभिन्न सम्प्रदाय होते हुये भी काव्य दृष्टि मात्र आनन्द विधान की ओर बनी रही। इस प्रकार काव्यानन्द की प्राप्ति के लिये जिन विभिन्न सम्प्रदायो की सृष्टि हुयी उनमें से एक सम्प्रदाय है अलंकार सम्प्रदाय। इस सम्प्रदाय के मूल प्रर्वतक भामह थे। काव्य के प्रति अलंकार की उपयोगिता को सामान्य रूप से सभी स्वीकार करते हैं। लेकिन सर्वप्रथम दण्डी नें काव्य के अन्तर्गत अलंकारो को विशेष महत्व दिया है। यह स्मरणीय है कि दण्डी के अलंकार सम्प्रदाय में सब कुछ आ जाता है। साथ बामन, रूद्रट, राजशेखर मम्मट विश्वनाथ तथा पंण्डित राज जगन्नाथ ने अलंकार शास्त्र को काव्य में विशेष महत्व देने की चेष्टा की है।

अलंकार एक सुनिश्चित योजना है जिसके माध्यम से काव्य विषयक सभी स्वरूप सुस्पष्ट होकर मानव हृदय को एक अलौकिक आनन्द की भूमिका में प्रतिष्ठित कराकर रसमय कर देते हैं। अलंकारो का सबसे प्रमुख गुण है, उनके द्वारा भावो का अधिक तीव्र होकर हृदय द्वारा आस्वाद्यमान होना। अलंकार के प्रयोग की सफलता एवं असफलता इसी पर आश्रित है। अलंकारों के प्रयोग के सम्बन्ध में इस बात पर सदैव ध्यान रखना पडता है कि उनकी अतिशयता कही भावो को अपने बोझ से दबा न दे जिससे वह सांस ही न ले सके। अलंकार की गति का भावों के साथ अत्यन्त सहज होना आवश्यक है। दोनो ही एक दूसरे से हिले मिले एक रूप होने चाहिये जिससे यह प्रतीत न हो कि यह अलंकार ऊपर से आरोपित है। अलंकार द्वारा काव्य की उपादेयता बढ़ जाती है और वह मानव हृदय के लिये सहज ही ग्राहय बन जाता है। अलंकार विषय मे आचार्य दण्डी का मत है, काव्य के उन धर्मो को अलंकार कहा जाता है जो उसकी शोभा को बकर किया गया दृष्टिगत होता है जिससे कहीं-कहीं बनावटी सा लगता है। उच्च कोटि के सन्तो में ऐसी प्रकृति का पाया जाना स्वाभाविक हो सकता है।

सन्त कबीर के काव्य में अधिकतर उन्हीं अलंकारों के प्रयोग परिलक्षित होते हैं जिनकी गणना अर्थालंकारो में की जाती है। वे उनकी अध्यात्मिक अभिव्यक्ति में स्वभावतः सहायक हुये हैं। कबीरदास जी ने अपने अत्यन्त गूढ विषय का परिचय अधिक से अधिक सरलता के साथ देने की चेष्टा करते हैं तथा अपनी साधनाओं एवं अनुभूतियों के स्पष्ट से स्पष्टतर विवरण प्रस्तुत कर दूसरो से भी उससे लाभ उठाने का अनुरोध करते है। कवि एक अमूर्त वस्तु को भी स्वभावतः मूर्त रूप प्रदान कर देते है। अन्तर्निहित साधनाओं को प्रत्यक्ष बना देने के लिये प्रतीको के प्रयोग करते है और अपनी निजी अनुभूति की अस्फुट अभिव्यक्ति को बोधगम्य कराने के प्रयास में दृष्टान्तो का सहारा लेने लगते हैं

V. कबीर की भाषा शैली

कबीरदास ने बोलचाल की भाषा का ही प्रयोग किया है। भाषा पर कबीर का जबरदस्त अधिकार था। वे वाणी के डिक्टेटर थे। जिस बात को उन्होंने जिस रूप में प्रकट करना चाहा है, उसे उसी रूप में कहलवा लियादृबन गया है तो सीधे-सीधे, नहीं दरेरा देकर। भाषा कुछ कबीर के सामने लाचारदृसी नजर आती है। उसमें मानो ऐसी हिम्मत ही नहीं है कि इस लापरवा फक्कड़ कि किसी फरमाइश को नाहीं कर सके। और अकह कहानी को रूप देकर मनोग्राही बना देने की तो जैसी ताकत कबीर की भाषा में है वैसी बहुत ही कम लेखकों में पाई जाती है। असीमदृअनंत ब्रह्मानन्द में आत्मा का साक्षीभूत होकर मिलना कुछ वाणी के अगोचर, पकड़ में न आ सकने वाली ही बात है। पर श्बेहद्दी मैदान में रहा कबीराश् में न केवल उस गम्भीर निगूढ तत्त्व को मूर्तिमान कर दिया गया है, बल्कि अपनी फक्कडाना प्रकृति की मुहर भी मार दी गई है। वाणी के ऐसे बादशाह को साहित्यदृरसिक काव्यानंद का आस्वादन कराने वाला समझें तो उन्हें दोष नहीं दिया जा सकता। फिर

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 10, Issue 4, July- August 2023 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2023.1004028

व्यंग्य करने में और चुटकी लेने में भी कबीर अपना प्रतिद्वन्द्वी नहीं जानते। पंडित और काजी, अवधु और जोगिया, मुल्ला और मौलवीद्द सभी उनके व्यंग्य से तिलमिला जाते थे। अत्यन्त सीधी भाषा में वे ऐसी चोट करते हैं कि खानेवाला केवल धूल झाड के चल देने के सिवा और कोई रास्ता नहीं पाता।

इस प्रकार यद्यपि कबीर ने कहीं काव्य लिखने की प्रतिज्ञा नहीं की तथापि उनकी आध्यात्मिक रस की गगरी से छलके हुए रस से काव्य की कटोरी में भी कम रस इकट्ठा नहीं हुआ है। कबीर ने जिन तत्त्वों को अपनी रचना से ध्वनित करना चाहा है, उसके लिए कबीर की भाषा से ज्यादा साफ और जोरदार भाषा की सम्भावना भी नहीं है और जरूरत भी नहीं है। परन्तु कालक्रम से वह भाषा आज के शिक्षित व्यक्ति को दुरूह जान पड़ती है। कबीर ने शास्त्रीय भाषा का अध्ययन नहीं किया था, पर फिर भी उनकी भाषा में परम्परा से चली आई विशेषताएँ वर्तमान हैं। इसका ऐतिहासिक कारण है। इस ऐतिहासिक कारण को जाने बिना उस भाषा को ठीकद्दठीक समझना सम्भव नहीं है। इस पुस्तक में उसी ऐतिहासिक परम्परा के अध्ययन का प्रयास है। यह प्रयास पूर्ण रूप से सफल ही हुआ होगा, ऐसा हम कोई दावा नहीं करते, परन्तु वह ग्रहणीय नहीं है, इस बात में लेखक को कोई सन्देह नहीं है।

VI. निष्कर्ष

हिंदी साहित्य में कबीर की काव्यभाषाष विषय पर यह निष्कर्ष कबीर के अद्वितीय काव्यभाषा के महत्वपूर्ण आयामों को प्रकट करता है, जो समाज के सामाजिक, धार्मिक और मानवीय विचारों को सरलता और साहित्यिक रूप में प्रस्तुत करने में समर्थ थी। कबीर की काव्यभाषा में आम जनता के दिल की बातों को सरलता से प्रकट करने की ताकत होती है। उनकी भाषा उनके गहरे धार्मिक और सामाजिक दृष्टिकोण को प्रकट करने के लिए एक माध्यम होती है, जिसमें अन्तरात्मा की अन्यता को छूने की क्षमता होती है। कबीर की भाषा में वे समाज की समस्याओं, जातिवाद, धार्मिक असमानता, और मानवीय जीवन के मुद्दों को चुनौती देते हैं। उनके पदों और दोहों में छिपे संदेश सभी को जागरूक करते हैं कि मानवता के मूल्यों की प्राथमिकता की आवश्यकता है। इस अध्ययन से हमें यह समझ मिलता है कि कबीर की काव्यभाषा उनके विचारों को सरल और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने का एक उत्कृष्ट माध्यम था। उनके काव्य में अनुभवों की गहराई, मानवता के सभी पहलुओं की महत्वपूर्णता, और धार्मिकता के उच्च मानकों का प्रतिष्ठान किया गया है।

संदर्भ सूची

1. डॉ नेपालसिंह उत्तरी भारत के सांस्कृतिक विकास में संतों का योगदान, पृ. 280
2. सं. परशुराम चतुर्वेदी कबीर साहित्य की परख पृ. 164
3. डॉ. पुष्पपाल सिंह, कबीर ग्रंथावली (सटीक) पृ. 261
4. कबीर ग्रंथावली, पृ. 13
5. वही, पृ. 13
6. कबीर, बीजक (कबीर चौरा मठ), साखी 139) पृ. 407
7. कबीर संत बानी संग्रह पृ. 49
8. डॉ. पुष्पपाल सिंह, कबीर ग्रंथावली (सटीक), सांच कौ अंग 198) पृ 116
9. सं. डॉ. श्यामसुंदर दास, कबीर ग्रंथावली साखी 26/3
10. साखी ग्रंथ उपदेश कौ अंग- 17) पृ. 275

IJARETY

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor

doi crossref

निस्केयर
NISCAIR

International Journal of Advanced Research in Education and TechnologY (IJARETY)

www.ijarety.in editor.ijarety@gmail.com